Indian J. Soc. & Pol. 13 (01):115-118: 2026 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2026 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना : एक कदम पर्यावरण संरक्षण की ओर : एक अध्ययन

दीक्षा कुमारी[1], इन्द्र सिंह ठाकुर[2]

[1]शोधार्थी, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, हिमांचल प्रदेश, भारत
[2]आचार्य, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, हिमांचल प्रदेश, भारत

ABSTRACT

भारतीय ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ ईंधन प्रदान करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना एक ऐतिहासिक पहल है। इस योजना ने पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इस बात को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अपनी रिपोर्ट में माना है। इस शोधपत्र का उद्देश्य उज्ज्वला योजना के पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना है। शोध में यह जानने का भी प्रयास किया गया है कि इससे घरेलू महिलाओं की जीवनशैली में क्या परिवर्तन आया है और महिला सशक्तिकरण को कितनी सहायता मिली है ,एलपीजी के उपयोग से घरेलू वायु प्रदूषण में महत्वपूर्ण कमी आई है, जिससे स्वास्थ्य समस्याओं में सुधार हुआ है। पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता कम होने के कारण वनों की कटाई में भी कमी आई है, जो वन संरक्षण और बायोडायवर्सिटी की रक्षा में सहायक है। इस योजना की महिला सशक्तिकरण, स्वस्थ्य समाज एवं पर्यावरण को साफ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण पर क्या प्रभाव पड़ा है इसका अध्ययन करना है। इस शोध प्रपत्र में द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा।

***KEYWORDS**: पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, ईंधन, ग्रामीण विकास*

ऋग्वेद के मन्त्रों में यह कहा गया है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ संतुलन और सामंजस्य बनाए रखना चाहिए। "माता भूमिः पुत्रोअह्म पृथिव्याः" का अर्थ है की पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके संतान हैं। यह मन्त्र पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करता है। आज के समय में ,जब पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं, वैदिक काल की पर्यावरणीय परम्पराएँ और दृष्टिकोण अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उस समय जो पर्यावरण के प्रति हमारे कर्तव्य और सम्मान था ,उसे अपनाकर हम आज के समय में भी इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। वैदिक काल भारतीय सभ्यता का वेह स्वर्णिम युग था ,जिसमें प्रकृति के प्रति मानव का गहन संबंध और सम्मान स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस काल में न केवल समाज की संरचना प्रकृ ति के साथ सामंजस्य में थी ,बल्कि धार्मिक ,सामाजिक और सांस्कृ तिक जीवन में भी पर्यावरण का अद्वितीय महत्त्व था। वैदिक साहित्य और रीति रिवाज हमें यह जानने में सहायता करते हैं कि उस समय प्रकृति और पर्यावरण के प्रति कितना जागरूक दृष्टिकोण था। वेदों में वनों और वृक्षों की महत्ता का वर्णन मिलता है।वनस्पति सूक्त में पेड़ पौधों को जीवनदायिनी कहा गया है। वनों का वर्णन उनमे अरण्यक के रूप में मिलता है और इसे देवताओं का निवास स्थान माना गया है। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं था , बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन बनाये रखना भी था।वैदिक ऋषियों ने यह सिखाया है कि मनुष्य को प्रकृति का उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसका संरक्षक बनना चाहिए।

लेकिन वर्तमान में जिस तरह से विकास के नाम पर अंधाधुंध विकास हो रहा है और प्रकृति को नुक्सान पंहुचाया जा रहा है वह किसी भी तरह से उचित नहीं हैं, इसलिए इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की ओर से जिस योजना का शुभारम्भ किया गया है उसका उद्देश्य यह है कि पर्यावरण को अधिक नुक्सान न हो पेड़ों की कटाई पर लगाम लगाई जा सके और मिट्टी का क्षरण होने से रोका जा सके। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना इस दिशा में सरकार द्वारा उठाया गया महत्त्वपूर्ण कदम है जो न केवल पर्यावरण के लिए लाभदायक है बल्कि महिलाओं के लिए भी फायदे मंद है। महिलाओं को उज्ज्वला योजना के माध्यम से जो एल पी जी की सुविधा दी जा रही है वह महिला, पर्यावरण तथा महिला सशक्तिकरण के लिए वरदान साबित हो रही है। ऐसा इस शोध पत्र के माध्यम से दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।

भारत देश दुनिया में जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर आता है। आने वाले समय में भारत दुनिया के विकसित देशों में शामिल होगा। स्वतन्त्रता के बाद से महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक स्तिथि को सुधारने के कई प्रयास किये गये हैं परन्तु लक्षित उद्देश्य प्राप्त करने में अभी सफलता प्राप्त नही हुई है। समय–समय पर केंद्र सरकार ने कई ऐसी योजनायें लायी जिससे महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हो ऐसी ही एक योजना है प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जो 1 मई 2016 को श्रमिक दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में जिसकी शुरुआत हुई। इस योजना के पीछे यह उद्देश्य था कि भारत में खाने पकाने के लिए

1: Corresponding Author

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लकड़ी , गोबर के उपले ,मिटटी का तेल ,कोयला, इत्यादि का प्रयोग होता है इससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे उन्हें कई प्रकार की बिमारियों का सामना करना पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 5 लाख मृत्यु अस्वच्छ ईंधन के प्रयोग से होती है। कई पहाड़ी क्षेत्रों में कई ऐसी घटनाएँ सामने आई हैं जिनमें महिलाएं लकड़ियाँ लाने जंगलों में जाती हैं और उन पर जंगली जानवर हमला कर देते हैं , कई बार पहाड़ों से गिर कर अपनी जान गवां देती है ,इस से न केवल महिलाओं के जीवन को खतरा होता है बल्कि पेड़ों के कटाव से पर्यावरण को भी हानि होती है। हजारों लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं जिससे परिस्तिथिकी संतुलन में व्यवधान पैदा हो रहा है। इसके अलावा, यह वन्यजीवों और मनुष्यों के जीवन को भी प्रभावित कर रहा है, इससे जलचक्र प्रभावित होगा ,वनस्पति और जीव नष्ट हो जाएँगे ,कार्बनडाईऑक्साइड में वृद्धि होगी ,जिससे ग्लोबल वार्मिग बढ़ेगी। पेड़ों को काटने से पशु–पक्षियों के आवास नष्ट हो जाते है। ऐसे कई अन्य नुकसान हैं जो पेड़ों के काटने से होते हैं। इसलिए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना न केवल महिलाओं के लिए बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी महवपूर्ण है ।

अध्ययन का उदेश्य

शोधपत्र का उद्देश्य प्रधानमन्त्री उज्ज्वला योजना का महिलाओं के स्वास्थ्य एवं उनके सशक्तिकरण पर पड़ने वाले प्रभाव तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है।

साहित्यिक पुनरावलोकन

उज्ज्वला गैस योजना के विषय में तथा महिलाओं के स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण , पर्यावरण संरक्षण तथा विकास पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने के लिए शोधार्थी ने विभिन्न पुस्तकों , लेखों , शोध पत्रों तथा ऑनलाइन सामग्री का अध्ययन किया ।

(बद्रीसाह 1683) वैदेशिक शास्त्र में भारतीय सभ्यता ,संस्कृति ,दर्शन ,अर्थशास्त्र ,राजनीति शास्त्र तथा धर्मशास्त्र का सारतत्व प्रस्तुत करने वाला अनुपम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में लेखक ने भारतीय जीवन का आधार पर्यावरण संतुलन की बात कही है, राजाओं को अपने राज्य कैसे स्थानों पर स्थापित करने चाहिए प्रकृति के निकट रहकर वातावरण को स्वच्छ कैसे बनांये रखना है इस विषय पर विस्तृत जानकारी उन्होंने साझा की है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के समान माना गया है, परन्तु आधुनिक समय में अंधाधुंध विकास, वृक्षों की कटाई पर्यावरण ह्रास चिंता का विषय है। इस प्रकार लेखक ने इस विषय पर विस्तृत जानकारी अपनी पुस्तक में दी है।

(गांधी, 1909) द्वारा लिखित हिन्द स्वराज यह महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें उन्होंने आधुनिक सभ्यता की आलोचना करते हुए आत्मनिर्भरता,सादगी और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर दिया है। इसमें उन्होंने औद्योगिकीकरण के नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की है जो प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और पर्यावरण का विनाश का कारण बनते हैं। भारत को सोने चिड़िया कहा जाता था इसके पीछे जो तर्क उन्होंने दिए हैं उसमें महत्त्वपूर्ण यह है कि पर्यावरण का अत्यधिक दोहन नहीं होता था उन्होंने कहा है "पृथ्वी के पास इतना है कि वह पूरी मानव जाति की आवश्यकताओं को पूरा कर सके , लेकिन इतना नहीं है कि वह एक व्यक्ति के लालच को भी पूरा कर सके" इस प्रकार महात्मा गाँधी ने प्रकृति के संरक्षण पर बल दिया है।

उपाध्याय (2017) ने अपनी पुस्तक एकात्म मानववाद में कहा है कि प्रकृति की मर्यादा न भूलें । यदि अंधाधुंध उत्पादन बढ़ाते गये तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे ? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं की यदि एक प्रकार से साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी ,नए विकल्प ढूंढे जा सकते हैं ।उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा की प्रकृति की संपदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है ।यही बड़ी तेजी के साथ और अनावश्यक रूप से हम उसका अपव्यय करते गये तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा । इस प्रकार पंडित दीनदयाल उपध्ययाय जी ने पर्यावरण के प्रति चिंता व्यक्त की है, जिस प्रकार वर्तमान समय में प्रकति का दोहन हो रहा है उसे रोका जाना चाहिए ।

गुप्ता, बजरंग लाल (2018) हिन्दू अर्थ चिंतन दृष्टि एवं दिशा इस पुस्तक में भारत के विकास के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट किये हैं उन्होंने सुमंगलम नामक एक नया विचार दिया है ,जिसका अर्थ भारत का विकास केवल अर्थ विषय पर आधारित न हो बल्कि अपनी प्रकृति ,प्रवृति ,संस्कृति ,अपने सवाल ,संसाधन परिवेश और पर्यावरण को ध्यान में रखकर समग्र संतुलित विकास का नाम है सुमंगलम ! मुख्यतःस्वसाधनों से देश के समस्त लोगों के जीवन स्तर को उपर उठाते हुए दीर्घकालीन समग्र सामाजिक सुख में वृद्धि करना ! इसी को पंडित दीनदयाल जी ने समझाने का प्रयास किया है एकात्म मानव दर्शन के आधार पर विचार एकात्म ढंग से ही करना पड़ेगा! सबके लिए एक मार्ग नहीं हो सकता ,भिन्न भिन्न मार्ग होंगे ।

अग्रवाल, (2018) ने अपनी पुस्तक पण्डितदीनदयालजी प्रेरक विचार में दीनदयाल जी कहते हैं कि पर्यावरण प्रेमी ,रोजगार सृजनकारी टेक्नोलॉजी ,हमें उत्पादन में वृद्धि तो जरुर करनी है, पर ऐसा करते समय प्रकृति या प्राकृतिक संसाधनों की मर्यादा को न भूलें। प्रकृति से हम उतना तथा इस प्रकार लें की वह उस कमी को स्वयं पुनःपूरित कर ले।

झा, प्रभात (2019) ने अपनी पुस्तक विचारकों की दृष्टि में एकात्म मानववाद में विकास की आधारभूत संकल्पना प्रस्तुत की है। इसमें उन्होंने कहा है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते हैं कि विकास की दिशा को भारतीय संस्कृति के एकात्म मानववाद के मूल में खोजा और स्वराज की सार्थकता को अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति से ही संभव ही समझा ,जिसमें विकास के साथ आनन्द है ,क्योंकि भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है ।वह सम्पूर्ण जीवन का ,सम्पूर्ण सृष्टि

का संकलित विचार करती है ।दीनदयाल जी ने जब यह पक्ष रखा था, तब संविधान में पंचायत राज संस्थाओ का स्थान नही था। शायद उनकी संकल्पना के इसी आधार पे 73वें और 74वें संविधान संशोधन से त्रिस्तरीय पंचायततीराज संस्थाओं के माध्यम से सत्ता के विकेंद्रीकरण और अंतिम व्यक्ति तक विकास की अवधारणा को दीनदयाल जी के अंत्योदय के लक्ष्य को सर्तक करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके द्वारा महिलाओं की सशक्त भूमिका को व्यापक करने के साथ व्यवहारिक समस्याओं के समाधान की तह तक जाने का प्रयास संभव है।

तिवारी, आदर्श. द्वारा संकलित बुकलेट उज्ज्वला से उत्थान में विभिन्न लेखकों द्वारा लेख लिखे गये हैं जिसमें विभिन्न शोधों के माध्यम से कहा गया है की उज्ज्वला योजना केन्द की सफलतम योजनाओं में से एक है। जिससे न केवल महिला सशक्तिकरण बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी लाभ हुआ है।

शिखर, वासिनी 2020 ने अपने शोध पत्र वेदों में वर्णित पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित विचार में भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार वेदों में पर्यावरण से सम्बंधित क्या लिखा गया है इसका विस्तृत वर्णन उहोने अपने शोध पत्र के माध्यम से सामने लाया है।

ई.एफ., शूमेकर 1973 जर्मन में जन्मे ब्रिटिश अर्थशास्त्री द्वारा लिखी पुस्तक स्मॉल इज ब्यूटीफुल इसमें आधुनिक औद्यौगिक समाज की समीक्षा प्रस्तुत की गई थी। इसमें उन्होंने लिखा है कि 'आधुनिक औद्योगिक समाज बौधिक दृष्टि से चाहे कितना परिष्कृत क्यों न हो, वह जिस नींव पर खड़ा है, उसे ही खोखला कर रहा है। लेखक ने चेतावनी दी कि धरती और इसके अपूर्णीय संसाधनों को ऐसी पूंजी समझने की भूल नही करनी चाहिए जिसका हम सृजन और व्यय या निवेश करते हैं।

गैया परिकल्पना 1970 गैया परिकल्पना एक वैज्ञानिक और पर्यावरणीय सिद्धांत है जिसे जेम्स लवलॉक ने 1970 में प्रस्तावित किया था। इस परिकल्पना के अनुसार, पृथ्वी और उसके समस्त जीवमंडल एक आत्म दृ संवेदनशील प्रणाली की तरह कार्य करते हैं , जो अपने पर्यावरण को स्थिर और जीवन के लिए अनुकूल बनाये रखने का प्रयास करता है। इसकी मुख्य अवधारणा यह है कि पृथ्वी एक जीवित इकाई है जिसके अनेक अंगों के बीच महत्वपूर्ण अन्तनिर्भरता विद्यमान है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

"स्वच्छ ईंधन, बेहतर जीवन" के नारे के साथ केन्द्र सरकार ने 1 मई 2016 को माननीय प्रधानमंत्री ने एक सामाजिक कल्याण योजना "प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना" की शुरुआत की है। यह योजना एक धुंआरहित ग्रामीण भारत की परिकल्पना करती है। इस योजना को पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा संचालित किया जा रहा है PMUY के माध्यम से देश के सभी गरीब परिवारों एवं राशन कार्ड धारक महिलाओं को रसोई गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाया जाता है, ताकि महिलाओं को लकड़ी, कोयले के चूल्हे से छुटकारा मिले और वातावरण को प्रदुषण मुक्त बनाया जा सके । इस योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे 5 करोड़ परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिए जाने का लक्ष्य रखा गया था जिसे 3 वर्षों में यानि 2019 तक पूरा किया जाना था । लक्ष्य सफलता पूर्वक प्राप्त हो जाने के पश्चात इसकी समय सीमा बढ़ा दी गयी 2020 तक 8 करोड़ परिवारों को इसमें शामिल किया गया । इस योजना के अंतर्गत महिला के नाम पर गैस कनेक्शन जरी क्या जाता है जो गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन कर रहे हैं । इस योजना के तहत लाभार्थी को गैस कनेक्शन मुफ्त दिए जाते हैं लेकिन गैस चूल्हा एवं पहली बार गैस को भरने का खर्च लगभग 1500 लाभार्थी को देने होते हैं ,लेकिन अगर हितग्राही इस खर्च को वहन करने में समर्थ नही है तो उसके लिए सरकार की ओर से किस्त की भी व्यवस्था की गयी है जिसे बाद में सब्सिडी के माध्यम से पूरा कर लिया जाता है। हितग्राही को तब तक सब्सिडी का लाभ नही मिलता जब तक उसका चूल्हा और पहली बार गैस भरने का खर्चा पूरा नही हो जाता है। जब यह पूरा हो जायेगा तो हितग्राही को सब्सिडी का लाभ उसके बैंक खाते में आने लगेगा।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लिए आवेदिका की आवश्यक नियम एवं शर्तें

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लिए कुछ नियम एवं शर्तें केन्द्र सरकार द्वारा हितग्राही के लिए तय की हैं उसके आधार पर ही इसका लाभ लिया जा सकता है। गैस कनेक्शन लेने के लिए गरीबी रेखा से नीचे कोई भी महिला जिसकी उम्र 18 साल से अधिक है इसके लिए आवेदन कर सकती है ,बशर्ते उसके परिवार की कोई अन्य महिला इसका लाभ न ले रही हो। इसके लिए आवेदिका आवेदन फॉर्म प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकती है या अपने नजदीकी एल. पी. जी. केन्द्र से प्राप्त कर सकती है। निम्नलिखित श्रेणियों में से किसी से भी सम्बन्धित व्यस्क महिला इसके लिए योग्य है–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) अति पिछड़ा वर्ग (एमबीसी), अन्त्योदय अन्न योजना (एएवाई), चाय और पूर्ण चाय बागान जनजातियाँ, वनवासी, द्वीप और नदी द्वीप समूह में रहने वाले लोग ,एस ईसी सी परिवारों (एएचएल टिन) या 14सूत्री घोषणा के अनुसार किसी भी गरीब परिवार केतहत सूचीबद्ध है । इसके लिए आवश्यक है की आवेदिका का नाम एसईसीसी–2011 के आंकड़ों में होना चाहिए और उनके पास जरूरी दस्तावेज जैसे –राशन कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड0, राष्ट्रीय बैंक का खाता, राजपत्रित अधिकार द्वारा प्रमाणिक स्वघोषणा पत्र जैसे जरूरी दस्तावेज लगते हैं। तथा लाभार्थी को फॉर्म भरते समय यह भी बताना पड़ता है कि उनको 14.2 किलोग्राम का सिलेंडर चाहिए या 5किलोग्राम का, आवेदिका अपनी आवश्कता अनुसार जो भरेंगी उनको वही प्राप्त होगा।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से होने वाले लाभ

इससे महिलाओं के समय की भी बचत हुई है क्योंकि एलपीजी गैस से खाना जल्दी बनता है तो वह अपने बचे हुए समय में कोई अन्य कार्य कर सकती हैं। इससे महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में भी सहायता हुई है,गरीब परिवारों को सब्सिडी के साथ मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिया जाता है ,जिससे उन्हें अपने सिमित साधनों का उपयोग अन्य आवश्यकतों पर करने का अवसर मिलता है। यह योजना समाज में बदलाव ले के आई है योजना से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है उन्हें स्वस्थ ,स्वच्छ और सुरक्षित जीवन जीने का अवसर प्रदान हुआ है। उज्ज्वला योजना से महत्वपूर्ण लाभ पर्यावरण को भी हुआ है जैव ईंधन जैसे लकड़ी, कोयला, गोबर के उपले जलाने से अत्यधिक धुआं और हानिकारक गैसें उत्पन्न होती हैं जो वायु प्रदुषण का कारण बनती हैं, पेड़ काटे जाते हैं जिससे वनों का संतुलन बिगड़ जाता है एलपीजी से जंगलों की कटाई में कमी आई है और वन संरक्षण हुआ है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की व्यवहारिक चुनौतियाँ

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (च्डन्ल्) ने गरीब परिवारों को स्वच्छ ईंधन प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है ,लेकिन इसके कार्यान्वयन के दौरान कुछ व्यवहारिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है इस योजना में लाभार्थी का चयन करने के लिए ठच्स् सूची एवं SECC सूची 2011 का प्रयोग किया गया है जबकि बहुत सारे परिवार ऐसे भी हैं जिनका नाम इन सूचियों में शामिल नही है इस वजह से उनको गैस कनेक्शन नही मिल पाता है । योजना के तहत पहला कनेक्शन तो मुफ्त में मिलता है, लेकिन सिलेंडर को दोबारा भरवाने की लागत गरीब परिवारों के लिए अधिक है इसलिए कई परिवार आर्थिक तंगी के कारण सिलेंडर रिफिल नही करवा पाते हैं और पारम्परिक ईंधनों पर ही निर्भर रहते हैं। सिलेंडर वितरण में भी असुविधा होती है दूरदराज और ग्रामीण इलाकों में सिलेंडर वितरण की सुविधा की कमी है, केन्द्रों की दूरी अधिक होने के कारण सिलेंडर प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। सब्सिडी की पैसा समय पर हितग्राहियों के बैंक खातों में समय पर नही पहुँचता है ,जिससे रिफिलिंग। में समस्या आती है। गैस चूल्हे पर खाना पकाते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए तथा इसका उपयोग कैसे किया जाता है इसकी जानकारी कई लोगों को नही होती है इसकी व्यवस्था करनी चाहिए प्रशासन को जिससे आग लगने जैसी घटनाएं न हों इसके लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है वे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता है। उन्हें न केवल धुएं भरी जिन्दगी से आजादी दिलाई है बल्कि समय की बचत के साथ यह योजना उनके लिए वरदान साबित हुई है। पारम्परिक तरीके से चूल्हों पर भोजन पकाने से उनके स्वास्थ्य पर जो असर होता था उसपे सकारात्मक प्रभाव डाला है । योजना ने महिलाओं के आर्थिक सश्क्तिकरण के लिए भी द्वार खोल दिए हैं एलपीजी कनेक्शन से जुडी सब्सिडी और मुफ्त कनेक्शन प्रदान करके सर्कार ने उन गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता दी है , जो पहले महंगे एलपीजी कनेक्शन लेने में असमर्थ थे। इससे महिलाएं अपने बचाए गये धन को अन्य आवश्यकतों और विकास कार्यों में लगा पाती हैं। पारम्परिक ईंधन का उपयोग न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक था बल्कि पर्यावरण पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता था। लकड़ी और कोयला जलाने से वनों की कटाई और वायु प्रदुषण की समस्याएं बढ़ रही थी, एलपीजी गैस के उपयोग से इन पारम्परिक ईंधनों की मांग कम हुई है ,जिससे वनों की कटाई में कमी है आई है और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिली है। इस योजना ने स्वच्छ ईंधन,बेहतर जीवन के नारे को सही चरितार्थ किया है।

REFERENCES

ठुलधारिया, बद्रीसाह. (1683) *दैशिकशास्त्र.* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन.

गांधी, महात्मा. (1909) *हिन्द स्वराज.* नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन.

उपाध्याय, द. 2017 *एकात्म मानववाद.* दिल्ली,प्रभात प्रकाशन.

गुप्ता, बजरंगलाल. 2018). *हिन्दू अर्थचिंतन दृष्टि एवं दशा.* नईदिल्ली, प्रभात प्रकाशन.

अग्रवाल , डॉ. (2018). *पं.दीनदयाल जी के प्रेरक विचार.* दिल्ली, विद्या विहार ,1600 कूचा दखनीराय,दरियागंज.

झा, स.(2019). *विचारकों की दृष्टि में एकात्म मानववाद.* नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन.

देवी, र. (2017). प्रधानमन्त्री उज्ज्वला योजना : मुद्दे और चुनौतियाँ. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अकादमिक एंड रिसर्च फाउंडेशन*, 705. 706

तिवारी, आ.(2018). *उज्ज्वला से उत्थान.* डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन.

शिखर, वासिनी.(2020). वेदों में वर्णित पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित विचार. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*,**6**(**3**):526–530

शूमेकर, ई एफ.(1973). स्मॉल इज ब्यूटीफुल.ब्लोंड एंड ब्रिग्स पब्लिशर्स, हार्पर कॉलिंस लंदन.